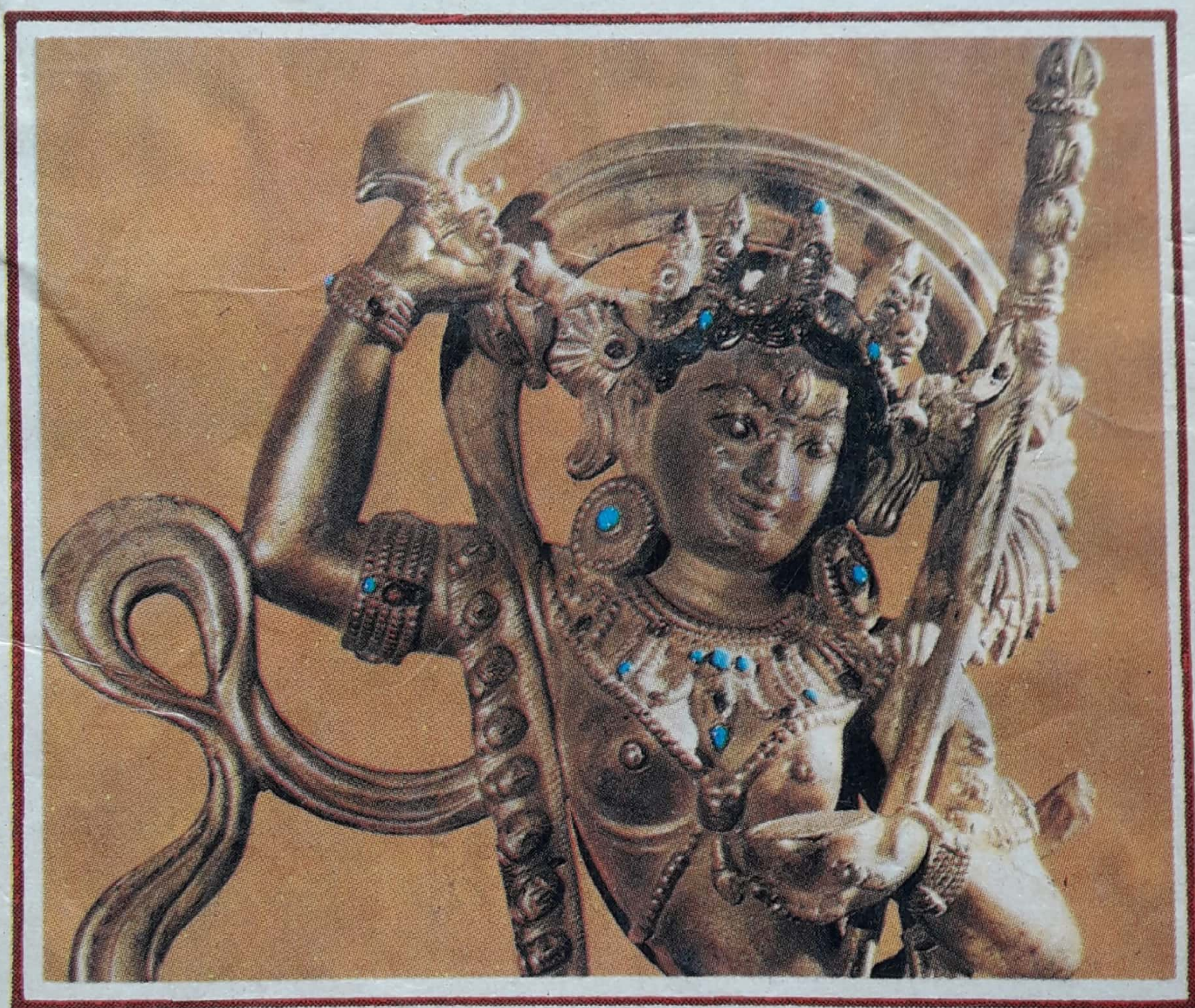
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

तंत्र साधनाएं



एस-सीरिज

अरविन्द प्रकाशन, जोधपुर

तंत्र साधना

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

अरविन्द प्रकाशन
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राजस्थान) - ३४२००१
फोनः ०२९१-३२२०९

प्रकाशक : अरविन्द प्रकाशन
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.)-३४२००१,फोन:०२९१-३२२०९
संस्करण : १९९३
मूल्य : ५.०० (पांच रुपये)
मुद्रक : ताज प्रेस, ए.-३५/४,मायापुरी,दिल्ली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका से साभार लेख

अनुक्रमणिका

दो शब्द

भारतीय ज्ञान-विज्ञान अपनी श्रेष्ठता और गहनता के कारण विश्व-विख्यात रहा, और भारतीय विद्याओं की महत्ता आज के वैज्ञानिक युग में भी दिन-प्रतिदिन स्पष्ट हो रही है किंतु यह खेद का विषय है कि यही ज्ञान-विज्ञान अपनी ही धरती पर उपेक्षित और व्यंग की दृष्टि से देखा जाता है, दृष्टिकोण में आए परिवर्तन के साथ-साथ भारतीय ज्ञान की दुरुहता भी एक प्रमुख कारण रही है क्योंकि इसे अपनी ही सम्पत्ति बनाए रखने के प्रयास में न केवल तोड़-मरोड़ की गई अपितु यह नीरस, जटिल और अस्पष्ट भी हो गया तथा समाज ऐसे साहित्य को भय-मिश्रित जिज्ञासा से देखने लग गया।

इस खेद-जनक स्थिति का समापन करने के लिए हमने एक प्रयास किया कि ज्ञान और साधना की सरस ढंग से प्रस्तुति हो और अरविंद प्रकाशन के द्वारा "एस सीरीज" में रोचक, तथ्यपरक व ज्ञान-वर्धक साहित्य का प्रकाशन आरम्भ किया। इसके प्रथम सेट के अंतर्गत् छह पुस्तकें प्रकाशित की गईं- **तांत्रिक त्रिजटा अघोरी, भुवनेश्वरी साधना, हंसा उड़हूं गगन की ओर, मैं बांहे फैलाए खड़ा हूं, सिद्धाश्रम, एवं अप्सरा साधना एवं सिद्धि**। इस सेट की प्रत्येक पुस्तक अपने ढंग की विशिष्ट व रोचक रही। उदाहरण के लिए पाठक वर्ग ने पहली बार ही त्रिजटा अघोरी जैसे प्रबल व्यक्तित्व का परिचय पाया और 'सिद्धाश्रम' के नाम से विख्यात सिद्ध स्थली की प्रामाणिक जानकारी ली। पाठक वर्ग ने इस सेट का उत्साहपूर्ण ढंग से स्वागत किया और साधनात्मक साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त जड़ता और नीरसता समाप्त करने का हमारा प्रयास सफल रहा। इन सभी पुस्तकों का आधार पूज्यपाद गुरुदेव से प्राप्त सूत्र एवं उनके गृहस्थ व सन्यस्त शिष्यों के प्रामाणिक अनुभव रहे। अपने-आप में मौलिक व अनुभूत तथ्यों पर

आधारित होने के कारण ही ये पुस्तकें जन मानस को गहरे तक जाकर न केवल छू सकीं वरन् उन्हें साधना के लिए भी नई चेतना प्रदान करने में समर्थ रहीं। ऐसा सब कुछ संभव होने में हमें कोई आश्चर्य नहीं रहा क्योंकि न केवल इन पुस्तकों के वरन् इन सभी शिष्यों के पीछे जो चैतन्य व्यक्तित्व है, जिनके ज्ञान और निर्देशन में इन सभी साधकों ने साधनाएं सम्पन्न कर सिद्धि पायी है, और अनेक रोमांचक अनुभव प्राप्त किए हैं (और जो इन पुस्तकों का आधार बने) उनका नाम है **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी** जो अपने सन्यासी शिष्यों के मध्य परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के रूप में विख्यात हैं। एक ही व्यक्तित्व में ज्ञान की अनेक धाराएं समाहित देख कर वास्तव में आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। पूज्यपाद गुरुदेव के व्यक्तित्व से जुड़ी सैकड़ों-हजारों, घटनाओं के आधार पर यदि उनके शिष्यों के अनुभव एकत्र किए जाएं तो वह एक विशाल ग्रंथ का आकार ले लेगा।

''जगदम्बा साधना'' में भगवती दुर्गा से सम्बन्धित शक्ति साधनाएं गोपनीय रहस्यों के साथ प्रकाशित की गई हैं, जिनसे तो शास्त्र के ज्ञाता भी अनभिज्ञ होगें, **''सौन्दर्य''** के अन्तर्गत् जीवन में सौन्दर्य की आवश्यकता और प्राप्ति का प्रामाणिक विवरण **''शिव साधना''** के अन्तर्गत् भगवान शिव से सम्बन्धित अत्यंत दुर्लभ साधनाएं, **''उर्वशी''** के अन्तर्गत् अप्सरा का पूर्ण विवरण व साधना, **''स्वर्ण सिद्धि''** के अन्तर्गत् स्वर्ण निर्माण से सम्बन्धित गोपनीय शास्त्रों का प्रकाशन, **''तारा साधना''** के अन्तर्गत् धन प्राप्ति की अचूक साधना **''तंत्र साधना''** के अन्तर्गत् जीवन को संवारने के कई दुर्लभ प्रयोग तथा **'हिप्नोटिजम''** के अन्तर्गत् सम्मोहन विज्ञान के सफल सूत्र पूर्ण प्रामाणिकता से वर्णित किए गए हैं।

हमें आशा है कि प्रथम सेट की ही भांति यह द्वितीय सेट भी पाठकों की रुचि के अनुकूल तथा जीवन में लाभ प्रदान करने में समर्थ होगा।

- **प्रकाशक**

मुद्रा और प्रणिपात

"मुद्रा : प्रवक्षयामि यामि मादन्ते सर्व-देवता"

शारदा तिलकतंत्र (२३ । १०६)

की इस युक्ति के अनुसार साधना जगत में मुद्राओं का महात्म्य सर्वविदित है, विश्व में प्रचलित प्रायः सभी धर्मों में मुद्रा का अपना विशेष स्थान रहा है, किंतु भारतीय सनातन धर्म के अंतर्गत आगम शास्त्र अर्थात् तंत्रों में मुद्राओं का जितना वर्णन मिलता है, उतना अन्यत्र नहीं, पूजा एवं साधना में मुद्रा प्रदर्शित करने से सभी देवता आनंदित होते हैं, पापों का क्षय हो जाता है, और देवताओं का सान्निध्य मिलना आरम्भ हो जाता है।

मुद्रा प्रदर्शन

मुद्रा द्वारा साधक भौतिक संसार से उत्तरोत्तर ऊपर उठकर व्यापक अनन्त की भावना करने में समर्थ और सफल होता है, इसलिए मुद्रा आध्यात्मिकता का 'सशक्त माध्यम है, हाथ की अंगुलियां और मुट्ठियों के जोड़ने-मोड़ने और खोलने से सम्पूर्ण मुद्राएं बनती हैं, अतएव हाथ, अंगुली और मुट्ठी (मुष्ठि) के भेद जानना आवश्यक है।

हाथ का मुद्रा भेद

मणिबंध या कलाई जहां राखी या घड़ी बांधते हैं, वहां से कनिष्ठका तक का अंग हाथ कहलाता है, इसका अग्रभाग पंच-शाख, शम और पाणि कहलाते हैं, इसमें जो अंगुलियां हैं वे कर-पल्लव या-शाख हैं।

अंगुलियां ५ होती हैं, उनमें पहली को अंगुष्ठ (अंगूठा) दूसरी को तर्जनी, तीसरी को मध्यमा अथवा जपकरणी चौथी को अनामिका और पांचवीं को कनिष्ठिा कहते हैं।

इन सबको बंद करने से मुष्टि या मुट्ठी बनती है, और खोल देने से करतल हो जाता है, करतल की पीठ को कर-पृष्ठ कहते हैं।

तीर्थ और देवता

हाथ में देवता और तीर्थ भी प्रतिष्ठित हैं, हाथ के आरम्भ में अंगूठे के कुछ नीचे आत्म तीर्थ, हाथ के अंत में अंगुलियों के ऊपर होकर परमार्थ तीर्थ, हाथ के ऊपरी भाग में कनिष्ठिका से कुछ नीचे देव तीर्थ और हाथ के दक्षिण तर्जनी और अंगूठे के बीच में पितृ तीर्थ है।

पंच महाभूत

हाथों की अंगुलियों में पांचों महाभूत प्रतिष्ठित हैं, प्राण-तोषिणी मंत्र के अर्थ कांड के प्रथम परिच्छेद में नील तंत्र के वचनानुसार।

१. कनिष्ठिका में पृथ्वी तत्व २. अनामिका में जल तत्व ३. मध्यमा में अग्नि तत्व ४. तर्जनी में वायु तत्व और ५. अंगुष्ठ में आकाश तत्व विद्यमान है।

परम लक्ष्य प्राप्ति में सहायक

"मुद्राभिरेव तृप्यन्ति न पुष्पादिक पूजनैः
महापूजा कृतातेन येन मुद्राष्टकं कृतं"

मेरु तंत्र की इस उक्ति के अनुसार महापूजा में मुद्रा प्रदर्शन का महत्व स्वयं स्पष्ट है, मुद्रा दिखाने वाले भक्त साधक पर देवता द्रवित होकर दया करते हैं, राक्षस भी मुद्रा के प्रभाव से अनुकूल हो जाते हैं, मुद्रा प्रदर्शन

से पूजा, महापूजा के स्तर को प्राप्त कर लेती है, राघव भट्ट साफ शब्दों में स्पष्ट करता है, कि मुद्रा प्रदर्शन से विष आदि द्वारा मूर्छित व्यक्ति भी स्वस्थ होता है, व्याधि और मृत्यु का निवारण मुद्राओं द्वारा हो जाता है, यही नहीं मानव जीवन के परम लक्ष्य 'मोक्ष' तक पहुंचने में मुद्रा विशेष सहायक होती है, इन मुद्राओं का अभ्यास योग्य गुरु के निर्देशन में ही करना चाहिए।

विविध मुद्राओं की तालिका

विविध देवताओं की प्रमुख मुद्राओं की इस तालिका से वांछित मुद्रा का विवरण सहज ही जाना जा सकता है --

विष्णु : शंख, चक्र, गदा, पद्म, वेणु, जीवत्स, कौस्तुभ, वनमाला, ज्ञान, विलव, गरुड़, नृसिंह, वाराह, हयग्रीव, धनुष, बाण, परशु, जगन्मोहिनी, काम।

शिव : लिंग, योनि, त्रिशूल, अक्ष, वर, अभय, मृग, खट्वांग, कपाल डमरू।

गणेश : दंत, पाश, अंकुश, विघ्न, परशु, मोदक, बीजपुर।

सूर्य : पदम्।

शक्ति : पाश, अंकुश, वर, अभय, धनुष, बाण, खड्ग, चर्म, मूसल, दुर्ग।

महाकाली : महायोनी, मुण्ड, भूतनी।

महालक्ष्मी : लक्ष्मी, चक्र।

महासरस्वती : अक्ष माला, वीणा, व्याख्या, पुस्तक, गौ।

तारा : योनि, भूतनी, बीज, धूमिनी, लोलिहा।

त्रिपुर सुंदरी : सर्व संक्षोभणी, सर्व विद्राविणी, सर्व कर्षयाणि सर्व वश्यकरी, सर्वोन्मादिनी, महाकुशा, खेचरी, बीज योनि।

पंचदेवों की मुद्राएं और प्रणिपात :-

१. शंख- बांए हाथ के अंगूठे को दाहिने हाथ की मुट्ठी में लेकर बांए हाथ की चारों अंगुलियां सीधी करके दाहिने हाथ को मुट्ठी में दबायें और दाहिने हाथ के अंगूठे का अग्रभाग बाएं हाथ की तर्जनी के अग्रभाग में लगावें तो शंख मुद्रा सम्पन्न होती है।

२. चक्र - दोनों हाथों को परस्पर देखते हुए भली भांति फैला दें, और कनिष्ठिकाओं को अंगूठों से लगा दें तो चक्र मुद्रा बनती है।

३. गदा- दोनों हाथ आपस में सम्मुख करके उंगलियां गूंथ दें, और बीच में फैले हुए अंगूठे उनमें

लगा दें तो गदा मुद्रा होती है।

४. पद्म- दोनों हाथों को परस्पर मिलाकर फूल की डोडी या कली के समान खड़ी कर दें, और दोनों अंगूठे उनके भीतर तल भाग में लगा दें तो पद्म मुद्रा होती है।

५. कौस्तुभ- दाहिनी कनिष्ठिका को उसी के पास की अनामिका की पीठ पर लगाएं, बांई कनिष्ठिका से तर्जनी और अनामिका को आबद्ध करें, दाहिने अंगूठे के मूल में बांई अनामिका बांधे और बांए अंगूठे से शेष उंगलियां सीधी लगाएं तो कौस्तुभ मुद्रा होती है।

६. ज्ञान- तर्जनी और अंगूठे के अग्रभाग को हृदय पर लगा कर बांए हस्त कमल को दाएं मोड़ कर रखें तो इष्ट को प्रसन्न करने वाली ज्ञान मुद्रा होती है।

७. गरुड़- दोनों हाथों को विमुख करके अर्थात् दोनों की पीठ परस्पर मिला दें, कनिष्ठिकाओं को गूंथ दें, दोनों तर्जनियों को इसी प्रकार आपस में मिला दें, दोनों अंगूठों को भी मिला दें, मध्यमा, अनामिका को पंखों की भांति हिलाएं तो विष्णु प्रिय गरुड़ मुद्रा होती है।

८. नारसिंही - दोनों हाथों को पैरों के बीच में देकर उकड़ू बैठें ठोड़ी और ओष्ठ समान बना लें,

दोनों हथेलियां जमीन में लगाएं, मुख की आकृति डरावनी बना लें, और जीभ को बाहर निकाल कर हिलाएं तो नृसिंह की प्रिय नारसिंही मुद्रा होती है।

९. धनुष - बांए हाथ की मध्यमा के अग्रभाग को तर्जनी के अग्रभाग में जोड़ें, और अनामिका तथा कनिष्ठिका को अंगूठे से दबाकर बाएं हाथ के कंधे के समीप ले जाएं तो धनुष मुद्रा होती है।

१०. बाण - दाहिने हाथ को सीधा करके मुट्ठी बांध लें और उसकी तर्जनी को लम्बी करें।

११. परशु- दोनों हाथों के करतल मिलाकर उंगलियों को फैलाने से फरसे के आकार की परशु मुद्रा होती है।

१२. जगन्मोहन- दोनों हाथ की मुट्ठियों पर अंगूठा रखने से यह मुद्रा होती है।

१३. काम - हाथों को सम्पुटित करके उंगलियों को फैला दें, दोनों तर्जनियों और मध्यमाओं को पीठ पर लगा दें और अंगूठे को मध्यमाओं से जोड़ दें तो काम मुद्रा होती है।

१४. मत्स्य- दाहिने हाथ की पीठ पर बाएं हाथ की हथेली रखकर अंगूठों को हिलाते रहें तो मत्स्य मुद्रा होती है।

१५. लिंग - दाहिने हाथ के अंगूठे को उठाकर, दाएं हाथ की उंगलियों पर बाएं हाथ की उंगलियों से चिपका दें तो लिंग मुद्रा होती है।

१६. योनि - कनिष्ठिकाओं को आपस में बांधें, ऊंची की हुई अनामिकाओं से तर्जनी को लगाएं दोनों मध्यमा फैला दें और अंगूठे, उनके समीप से कनिष्ठिकाओं के समीप कर दें तो योनि मुद्रा होती है।

१७. त्रिशूल- अंगूठे से कनिष्ठिका को दबाकर शेष तीनों उंगुलियों तर्जनी, मध्यमा और अनामिका को सीधी करने से त्रिशूल मुद्रा होती है।

१८. अभय - बाएं हाथ को ऊर्ध्वमुख फैला देने से अभय मुद्रा होती है।

१६. वर- अधः स्थित दाहिने हाथ को आगे पसारने से वर मुद्रा होती है।



तंत्र साधना

बहुत कम लोग जानते हैं कि तंत्र-साधना में जन-साधारण के लिए भी तांत्रिक साधना के द्वार खुले हुए हैं। वाम-मार्गी तंत्र साधना के पंचमकारों के कारण इस साधना को बहुत गलत तरीके से सोचा-समझा गया है। वस्तु-स्थिति यह है कि तंत्र साधना दमित मनोवेगों के दुष्परिणामों से सर्वाधिक दूर रही है। इस कारण तांत्रिक साधकों के लिए व्यक्तित्व के सहज और स्वाभाविक विकास की संभावनाएं भी बहुत अधिक हैं। सामान्य जीवन व्यतीत करते हुए आध्यात्मिक आनंद की उपलब्धि के लिए संयमित भोग का सिद्धांत वर्तमान युग के परिप्रेक्ष्य में जितना संगत लगता है, उतना कोई दूसरा सिद्धान्त नहीं।

इस लेख में तंत्र साधना के उन तत्वों पर प्रकाश डाला गया है, जिनसे इसका सही मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है।

तंत्र का योग से गहरा सम्बंध है, कहा जा सकता है कि योग तंत्र का ही एक भाग है। बहुत से योगाभ्यास जैसे आसन, प्राणायाम, त्राटक, योग निद्रा, क्रिया योग का उल्लेख उन प्राचीन तंत्र ग्रंथों में ही है, जो उपनिषदों और योग सूत्रों से कई शताब्दी पूर्व लिखे जा चुके थे। आज जिसे हम योग कहते हैं वह उपनिषदों के दर्शन तथा तंत्र का एक समन्वित रूप है। योग और तंत्र का लक्ष्य एक है, परंतु मार्ग भिन्न-भिन्न है। **योग के अनुसार काम ऊर्जा का 'सब्लीमेशन' आध्यात्मिक ऊर्जा के रूप में होना चाहिए। अतः उसका (काम ऊर्जा का) उपयोग इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वह साधक की आध्यात्मिक उन्नति में सहायक बन सके। योग काम ऊर्जा के दमन की बात नहीं करता, परंतु उसके प्रभाव को कम और नियंत्रित करने का सुझाव देता है।** काम-मिलन (मैथुन) एक इन्द्रियातीत अनुभव है, परंतु यह ध्यान के उच्चतम स्तरों के अनुभव की बराबरी नहीं कर सकता। इसलिए काम ऊर्जा के प्रभाव से मुक्त होकर ही अलौकिक आध्यात्मिक आनंद का सुख प्राप्त किया जा

सकता है। काम ऊर्जा भौतिक जीवन की एक आवश्यकता है, परंतु आध्यात्मिक विकास के लिए बाधक है।

दूसरी ओर, तंत्र के अनुसार आध्यात्मिक उन्नति के लिए काम-मिलन के अनुभव का पूरा-पूरा सदुपयोग किया जाना चाहिए। योग और तंत्र का लक्ष्य एक है भौतिक जगत से ऊपर उठना। परंतु तंत्र एक दूसरा मार्ग बताता है, विशेषकर उन लोगों के लिए जो काम ऊर्जा के सागर में आकण्ठ डूबे हुए हैं। तंत्र कहता है कि काम वेग का दमन मत करो, इसका सदुपयोग करो। काम ऊर्जा मनोरंजन का साधन नहीं है। यह आध्यात्मिक अनुभव के उच्चतम शिखर पर पहुंचने का मार्ग है। काम ऊर्जा का सदुपयोग करने के जो उपाय तंत्र ने सुझाए हैं, उनको व्यवहार में लाने से काम के प्रति रुचि स्वतः ही समाप्त हो जाती है। **तंत्र के आदि गुरु शिव के अनुसार नर-नारी मिलकर ही पूर्ण इकाई बनाते हैं। एक ही मानव इकाई दो भागों-नर और नारी-में बंटी हुई है।** इकाई के अकेले एक भाग के लिए आध्यात्मिक उपलब्धियों का मार्ग बंद है।

तंत्र का मूल मंत्र है-प्रकृति के अनुकूल साधना। मानव की प्रकृति है भोग। तांत्रिक नियमों के अनुसार संयमित भोग के द्वारा साधना करने से ही भोग की

निवृत्ति होती है। मनुष्य प्रकृति के द्वारा निर्मित हुआ है। इसलिए प्रकृति के अनुकूल चलकर ही उसका विकास हो, तभी यह उसके लिए हितकर होगा। प्रकृति के अनुकूल होने का सिद्धान्त आध्यात्मिक साधना के द्वार जनसाधारण के लिए भी खोल देता है। **जीवन सच्चिदानंद है। इस आनंद को अनुभव करने का अधिकार जितना तांत्रिकों एवं साधकों या सन्यासियों को है उतना ही जनसाधारण को भी।** इस सिद्धांत का आधार पंचमकार (अर्थात् मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन) है। इनमें सबसे अधिक स्वाभाविक और प्राकृतिक प्रवृत्ति मैथुन की है। तंत्र साधना में इन पांचों और विशेष रूप से मैथुन के नियंत्रित उपयोग की बात कही गई है जो निश्चित ही इन पांचों वस्तुओं के उच्छृंखलतापूर्ण तथा अनियंत्रित उपभोग (जैसा कि साधारण जीवन में देखा जाता है) से श्रेयस्कर है। इनका नियंत्रित उपभोग करने से व्यक्तित्व का विकास होता है, और साधक के भीतर स्थिरता का उदय होता है।

तांत्रिक साधक शरीर तत्व को साथ लेकर आगे बढ़ता है क्योंकि वह जानता है कि इस तत्व को छोड़ना कठिन और अस्वाभाविक है। तंत्र के अनुसार स्वस्थ शरीर और मन आध्यात्मिक साधना के आधार हैं। भोग मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति है। त्याग की प्रवृत्ति कष्ट

से उपार्जित की जाती है। इसलिए स्वाभाविकता से दूर है। गुरु के निर्देशन में पंचमकार का भोग करने से संयम की उत्पत्ति होती है, और भोगों की तरफ से मन हटने लगता है। साधक यह समझने लगता है कि भोगों से चिर-स्थायी आनंद नहीं मिल सकता। शाश्वत सुख के लिए साधक का हृदय उत्कंठित होने लगता है। तब साधक पशु भाव और पंचमकार की आसक्ति छोड़ने के लिए तत्पर हो जाता है।

वृहत्तर आनंद की प्राप्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं को तंत्र साधना में पाश के नाम से पुकार गया है। **ये पाश आठ प्रकार के होते हैं-भूख, प्यास, डाह, डर, लाज, मान, राग, और द्वेष।** ये पाश मानव को उसके मूल चैतन्य स्वरूप से असम्बद्ध कर देते हैं। इन पाशों में प्रमुख है **'डर'**। डर से मुक्ति पाने के लिए अमावस्या की रात्रि में श्मशान घाट में मुर्दे के ऊपर बैठकर मंत्र जप किया जाता है। इन पाशों से मुक्त होने के लिए गुरु के निर्देशन में कठिन साधना करनी पड़ती है। ज्यों-ज्यों एक-एक पाश से मुक्ति मिलती जाती है, साधक अपने भीतर शक्ति का प्रादुर्भाव अनुभव करने लगता है।

तंत्र में आत्म-ज्ञान को प्रमुखता दी गई है। मारण, स्तम्भन, उच्चाटन, वशीकरण आदि क्रियाओं को गौण माना गया है। ये गौण क्रियाएं (जिन्हें अभिचार क्रियाएं भी कहते

हैं) लोभ मार्ग है, जिन पर चलकर पतन की सम्भावनाएं बनती हैं। अभिचार क्रिया के मोह से मुक्त होने पर, दिव्य भाव की प्राप्ति होने पर साधक इन्द्रियातीत हो जाता है। इच्छा मात्र से ही वह धरती की किसी भी वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

पंचमकार क्या है?

जो भोग्य पदार्थ मनुष्य के पतन का कारण बनता है, उसे यदि गुरु द्वारा निर्देशित प्रक्रिया से सही तरीके से उपयोग में लाया जाए, तो वही मोक्ष का साधन बन सकता है। तंत्र में असंयम को महान शत्रु माना गया है। पंचमकार भोग के लिए नहीं है, वरन उनका भोग एक इन्द्रियातीत अनुभव को प्राप्त करने का साधन है।

पंचमकार का संयम पूर्वक भोग अत्यन्त कठिन कार्य है। इसीलिए तंत्र साधना एक कठिन साधना मानी गई है। 'कुलार्णव' ग्रंथ में कहा गया है:

कृपाणधारागमनाद् व्याघ्रकंठावलंबनात्।
भुजंगधारणान्नूनमशक्यं कुलवर्तनम्।।

तलवार की धार पर चलना, शेर को अपने आलिंगन पाश में बांध लेना और सांप को गले में धारण करना कठिन कार्य हैं, परंतु उनसे भी कहीं कठिन तांत्रिक साधना का मार्ग है। असंयमी तथा पशु-भाव के साधकों के लिए पंचमकार का सेवन निषिद्ध

है। ऐसे साधको के लिए पंचमकारों का सेवन करने का विधान इस प्रकार है-

मद्य के स्थान पर नारियल का पानी और दूध। मत्स्य के स्थान पर रक्त मूलक तिल और मसूर। मांस के स्थान पर नमक, लहसुन और अदरक। मुद्रा के स्थान पर तंदुल। मैथुन के स्थान पर जगदम्बा के चरण-कमलों में पुष्प -समर्पण

अब हम पंचमकारों के बहु-चर्चित तत्व मैथुन पर विचार करेंगे। तंत्र में काम ऊर्जा एक नियंत्रित विधि से प्रवाहित की जाती है। **सामन्य यौन जीवन न आध्यात्मिक है, और न अ-आध्यात्मिक। परंतु योगाभ्यास के द्वारा यौन जीवन को आध्यात्मिक उपलब्धि का एक साधन बनाया जा सकता है।** जब योगाभ्यास के साथ यौन जीवन को समन्वित किया जाता है तो शरीर में पाए जाने वाले सुप्त ऊर्जा केंद्र उत्तेजित हो उठते हैं, जो साधना का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

यौन जीवन के तीन उद्देश्य हैं-सन्तानोत्पत्ति, मनोरंजन और समाधि। तंत्र में तीसरे उद्देश्य को ही मान्यता दी गई है। तांत्रिक योगी काम का उपभोग उच्च स्तर के आध्यात्मिक अनुभवों के लिए करता है। पंचमकार के संयमित सेवन का समर्थन करने वाले तांत्रिक योगियों का मत है कि नर और नारी के मिलन से कुण्डलिनी जाग्रत हो सकती है। इस मिलन के चरमोत्कर्ष के बिंदु पर ऊर्जा का विस्फोट होता है। इस क्षण में जो ऊर्जा लहरियां बनती हैं, वे स्वयं में बहुत महत्वपूर्ण नहीं हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें ऊर्ध्वगामी बनाया जाता है

या नहीं। यदि योगाभ्यास के द्वारा इस क्षणिक चरमोत्कर्ष के अनुभव की अवधि बढ़ाई जा सके तो इन ऊर्जा लहरियों की ऊर्ध्वगामी यात्रा प्रारम्भ हो जाती है, और आध्यात्मिक अनुभव अधिक स्पष्ट होने लगता है।

मैथुन संभोग नहीं हैं। दोनों में बाह्य शारीरिक क्रियाएं भले ही एक हों, परंतु मानसिक पृष्ठभूमि बिल्कुल भिन्न होती है। सम्भोग में स्त्री-पुरुष का मिलन वासना को उत्पन्न करता है। तांत्रिक मैथुन में वासना के लिए कोई स्थान नहीं है। इस प्रकार का मैथुन भोगियों के वश की बात नहीं है। इसे केवल योगी ही कर सकते हैं, जिनके सम्मुख एक स्पष्ट उद्देश्य रहता है- मूलाधार से कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करना। पंचमकार का सेवन केवल परिपक्व बुद्धि के गृहस्थ साधक या तांत्रिक साधक ही कर सकते हैं। **पंचमकार पर आधारित तंत्र मार्ग (वाम मार्गी) से ऊर्ध्वगामी यात्रा के इच्छुक साधक ही गुजरते हैं।** परंतु इसका दुरुपयोग हुआ तो यह मार्ग साधक को अवनति-घोर अवनति की ओर भी ले जा सकता है।

तंत्र साधना को बहुत सावधानी से समझने की आवश्यकता है। अभी तक ऐसा नहीं हुआ है। इसीलिए यह अनेक प्रकार की भ्रान्तियों के घेरे में फंस गई है। साधारण गृहस्थ-जनों के लिए आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त करने में जो महत्वपूर्ण भूमिका तंत्र साधना ने निभाई है, उसका मूल्यांकन तभी किया जा सकता है जब इसके मूल तत्वों को गहराई से परखा-समझा जाए।



होली पर
सिद्ध गोपनीय साधना विधियां

होली का त्यौहार जहां आन्तरिक उल्लास और भ्रातृत्व प्रेम का प्रतीक पर्व है, वहीं साधकों के लिए यह एक दुर्लभ अवसर है, जबकि वे अपनी मनोवांछित साधनाएं सिद्ध कर पूर्ण सफलता पा सकते हैं।

यों तो होली पर सम्पन्न करने वाली कई साधना विधियां हैं, जिन में साबर तंत्र, अघोर साधना तंत्र, श्मशान मंत्र और सिद्ध मंत्र हैं, परंतु तिब्बत में प्रचलित साधना विधियां तो अचूक प्रभावपूर्ण और तुरंत सिद्धि प्रद हैं, तिब्बत तो तांत्रिक साधनाओं का गढ़ रहा है।

होली के अवसर पर तिब्बती साधना सिद्धियां प्रस्तुत कर रहे हैं, लामाओं के साथ रहे हुए योगी भूतकेशी बाबा, जो इस क्षेत्र के अद्वितीय सिद्ध हैं।

पाठकों के लिए पहली बार उज्ज्वल, महत्वपूर्ण, तुरंत प्रभावोत्पादक, सिद्ध गोपनीय तांत्रिक मंत्र एवं सिद्धियां . . .

यदि सही अर्थों में कहा जाए तो तिब्बत के लामाओं ने तंत्र क्षेत्र में कुछ ऐसी साधना विधियां और सिद्धियां प्राप्त कीं जो विश्व में विख्यात हैं, और जिसके माध्यम से उन्होंने प्रकृति को पूर्णतः नियन्त्रित करने में सफलता प्राप्त की, वहीं दूसरी ओर इनका प्रभाव अपने- आप में अचूक और सिद्धिप्रद है।

राहुल सांस्कृत्यायन ने तिब्बत के इन तांत्रिक ग्रंथों को देखकर कहा था, कि तंत्र के क्षेत्र में जितने महत्वपूर्ण और अद्वितीय साधना रहस्य तिब्बत के लामाओं के पास हैं, उसकी कोई तुलना नहीं है, ये मंत्र सभी देशों में सभी स्थानों पर समान रूप से उपयोगी और महत्वपूर्ण हैं।

इनमें से कुछ तो ऐसे तंत्र हैं, जिनका प्रयोग इन्हीं दिनों किया जा सकता है, तंत्र में मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन और उच्चाटन क्रियाएं महत्वपूर्ण कही गई हैं।

मैं लगभग सत्रह वर्ष तक तिब्बत में और विशेषकर इन महत्वपूर्ण तांत्रिक लामाओं के बीच रहा, यद्यपि वे अपने साधना रहस्य जल्दी से स्पष्ट नहीं करते, इन सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए मुझे जो कष्ट और दुःख उठाने पड़े, वे मैं ही जानता हूं, परंतु मुझे यह प्रसन्नता है, कि मैं उन साधना रहस्यों

को प्राप्त कर सका, जो विश्व के उज्ज्चलतम रत्न हैं।

मोहन प्रयोग

किसी को भी अपने वश में कर देना पूरी भीड़ को और उपस्थित समुदाय को अपने अनुकूल बना लेना इसकी विशेषता है, श्री कृष्ण ने सैकड़ों गोपियों को इसी के द्वारा वश में कर रखा था, नेताओं के लिए, प्रवचन - कर्त्ताओं के लिए, भाषण देने वालों के लिए, यूनियन के लीडरों के लिए, और नित्य उपस्थित व्यक्तियों को मोहित करने के लिए यह प्रयोग अद्‌भुत सिद्धि प्रदायक है।

प्रयोग

इसमें तेल का दीपक, २१ हकीक पत्थर (जो मोहन मंत्र से सिद्ध हो) जल पात्र, और २१ पीपल के पत्ते प्रयुक्त होते हैं।

विधि

गाय का दुग्ध लेकर उसमें रविवार को थोड़ी सी हल्दी मिलाकर स्याही बनावें और दक्षिण दिशा की ओर लाल आसन बिछाकर बैठ जाएं, सामने **२१ हकीक पत्थर** एक ही पंक्ति में रख दें, फिर भोजपत्र पर **"हुं मणिभद्रे फट्"** लिखें, और अपने सामने रख दें, तत्पश्चात् २१ हकीक पत्थरों पर उस स्याही से बिन्दी लगावें और २१ पीपल के पत्तों पर क्रम से निम्न मंत्र

लिखें।

मंत्र

"ॐ क्लौं कामाय क्लौं कामिन्यै क्लीं"

फिर बाद में उसी स्थान पर बैठकर २१ माला मंत्र जप करें, और इस प्रकार पांच दिन करें।

तत्पश्चात् इसी मंत्र से अग्नि में गुग्गुल के द्वारा १०१ आहुतियां दें तो मंत्र सिद्ध हो जाता है, और जब भी मोहन प्रयोग करना हो तो उन हकीक पत्थरों की छोटी से पोटली बाधंकर अपनी जेब में रखें तो वह सामान्य मनुष्य या उपस्थित लोगों को तो क्या, पूरे विश्व को मोहित कर सकता है।

अवधि

तिब्बती ग्रंथों के अनुसार यह प्रयोग वसन्त पंचमी से नवरात्रि के बीच कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है।

वशीकरण प्रयोग

मोहन प्रयोग जहां अधिक लोगों, श्रोताओं या भीड़ को वश में करने के लिए किया जाता है, वहीं वशीकरण प्रयोग किसी विशेष व्यक्ति पर कर, उसे अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

यह एक अद्वितीय प्रयोग है, जिसे पुरुष या स्त्री

कोई भी कर सकता है, अपनी प्रेमिका को हमेशा के लिए वश में करने के लिए, अपने प्रेमी को अनुकूल बनाने के लिए, अधिकारी को अपनी इच्छानुसार चलाने के लिए और किसी भी व्यापारी व्यक्ति या महत्वपूर्ण हस्ती को हमेशा-हमेशा के लिए इस विधि के द्वारा अपने वश में करने के लिए किया जा सकता है।

सामग्री

वट - वृक्ष के आठ पत्ते, जल पात्र, तेल का दीपक, आठ गोमती चक्र, तथा हकीक माला।

किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी से इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जा सकता है, घर के किसी कोने में दक्षिण की ओर मुंह कर बैठ जाएं, सामने आठ वट - वृक्ष के पत्तों पर केशर से उसका नाम लिख ले, जिसे वश में करना है, फिर उन पत्तों पर गोमती चक्र रख दें व केशर से उन गोमतीचक्रों पर बिंदी लगा ले, प्रत्येक गोमती चक्र पर केशर से ही योनि व लिंग का आकार बना दें, फिर हकीक माला से ग्यारह माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ नमः कालिकायै सर्वाकर्षिण्यै

अमुकीमाकर्षयाकर्षय शीघ्रमानयानय आं हीं क्रां भद्रकाल्यै नमः।।

इसमें उसका फोटो यदि सम्भव हो जिसे वश में करना हो, सामने रखें तो ज्यादा उचित रहता है, पांच दिन के प्रयोग के बाद मात्र सौ आहुति अग्नि में घी और गुलाब पुष्प से ऊपर लिखे मंत्र को पढ़ कर दें तो निश्चय ही जीवन भर के लिए वह व्यक्ति या स्त्री वश में रहती है, और किसी भी स्थिति में जुदाई नहीं होती, अपितु हम जैसा चाहते हैं, वैसा ही वह करने के लिए बाध्य होता है।

अद्‌भुत और आश्चर्यजनक सिद्धिप्रद आकर्षण या सम्मोहन प्रयोग है, जिसको मैंने कई बार आजमाया है, और पूरी-पूरी सफलता प्राप्त की है।

अवधि

वसंत से नवरात्रि के बीच या किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी से इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है,

उच्चाटन

किसी के प्रति प्रेम या आसक्ति समाप्त हो जाने की क्रिया को उच्चाटन कहते हैं, यदि पति किसी अन्य स्त्री के प्रेम में आसक्त है, या प्रेमिका किसी अन्य पुरुष में रुचि

लेने लगी है या प्रेमी का झुकाव किसी अन्य लड़की की तरफ होने लगा है या ऐसा कोई भी कारण हो तो परस्पर मतभेद किए जाने वाले प्रयोग को उच्चाटन कहा जाता है।

सामग्री

बिल्ली की नाल, सियार सिंगी, जलपात्र, तेल का दीपक, और मूंगे की माला।

यह प्रयोग वसंत पंचमी से नवरात्रि के बीच किसी भी कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को सम्पन्न किया जा सकता है, घर में नीली धोती या साड़ी पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सिर के बाल खोलकर बैठ जाए, और मूंगे की माला से ग्यारह माला मंत्र जप करे, इस प्रकार तीन दिन करे, चौथे दिन काली मिर्च और तेल मिलाकर अग्नि में मात्र सौ आहुतियां दें तो निश्चय ही उन दोनों का भयंकर झगड़ा हो जाता है, और हमेशा के लिए उनका परस्पर उच्चाटन हो जाता है।

मंत्र

ॐ ल्बूं स्लूं म्लूं क्ष्लूं कालरात्रि महाध्वांक्षि अमुकमाशूच्चाटयोच्चाटय छिंधि भिंधि स्वाहा ह्रौं कामाक्षि क्रौः।

विद्वेषण

किन्ही दो व्यक्तियों में भयंकर लड़ाई-झगड़ा करा देने को विद्वेषण कहते हैं, पति - पत्नी में, प्रेमी या प्रेमिका की किसी अन्य के प्रति आसक्ति हो तो इन दोनों के बीच विद्वेषण इस प्रयोग के द्वारा सम्भव है।

सामग्री : पांच नीले हकीक, बिल्ली की नाल तथा छोटा दक्षिणावर्ती शंख।

इसे किसी भी रविवार को प्रारम्भ कर तीन दिन तक नित्य एक हजार मंत्र जप करने से सफलता मिलती है। किसी भी रविवार को दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर नीली धोती या नीली साड़ी पहिनकर बैठ जाएं, बाल खुले कर दें, सामने बिल्ली की नाल व पांच नीले हकीक रख दें और उस पर दक्षिणावर्ती शंख जो अंगूठे के आकार का हो, उल्टा रख दें, फिर **मूंगे की माला** से मात्र एक हजार मंत्र जप करें, तीन दिन इस प्रकार करे, चौथे दिन इसी मंत्र से अग्नि में घी और काली मिर्च से सौ आहुतियां दें तो निश्चय ही विद्वेषण सिद्ध हो जाता है।

मंत्र

ॐ ह्रौं ग्लौ ह्रसौं भगवति दंड धारिणि अमुकमामुकं शीघ्रं विद्वेषय विद्वेषय रोधय रोधय भंजय भंजय श्रीं मायाराज्ञ्यै ॐ हुँ हुँ हुँ।

अवधि : इसे वर्ष में कभी भी किसी भी रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है।

मारण : शत्रु को या दुष्ट को समाप्त कर देने की विधि या मंत्र को तांत्रिक ग्रंथों में मारण प्रयोग कहा गया है।

जब भी कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मंगलवार हो तो उस दिन गौशाला की मिट्टी और जहां चार रास्ते मिलते हों वहां की मिट्टी से पुतला बनावें और उस पर शत्रु का नाम लिख ले, फिर उस पर सफेद कपड़ा ओढ़ा दे और सफेद कपड़े पर सियार सिंगी रख ले, फिर हकीक माला से नित्य एक हजार मंत्र जप तीन दिन तक करें तो निश्चय ही मारण प्रयोग सिद्ध होता है।

मंत्र

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं मृतेश्वरि कृं कृत्ये अमुकं शीघ्रं मारय मारय क्रौं

तीन दिन के बाद सरसों और काली मिर्च को तेल में भिगोकर इसी मंत्र की एक हजार आहुतियां दें तो निश्चय ही शत्रु का मारण होता है। वस्तुतः ये सारे प्रयोग अद्भुत और शीघ्र सफलतादायक हैं, जो कि परीक्षित और लेखक के अनुभवगम्य हैं।



मैं आत्माओं से गोपनीय तंत्र सीखता हूं

ब्रह्माण्ड में लाखों आत्माएं घूमती रहती हैं, और वे मनोवांछित गर्भ में प्रवेश कर जन्म लेने को उत्सुक हैं, इन आत्माओं में विश्वामित्र की आत्मा से सम्पर्क स्थापित कर मनोवांछित जानकारी पाई जा सकती है।

भारतीय दर्शन सदियों से ऐसी आत्माओं से सम्पर्क स्थापित करता रहा है और मनचाही जानकारी प्राप्त की है, आत्माओं से सम्पर्क स्थापित करने की, मनोवांछित जानकारी प्राप्त करने की विधि पुस्तिका के पन्नों पर प्रस्तुत है. . .

जिस प्रकार से पृथ्वी पर हमारा अस्तित्व है, उसी प्रकार से ब्रह्माण्ड में लाखों-लाखों आत्माओं का अस्तित्व भी विद्यमान है, कलकत्ता जैसे महानगर के भीड़-भाड़ भरे इलाके की कल्पना करें, और यदि आप

देखें तो उस भीड़ में हजारों-हजारों मनुष्यों के सिर ही सिर दिखाई देगें, ठीक उसी प्रकार से वायुमंडल में भी इसी प्रकार लाखों आत्माएं एक दूसरे से टकराती हुई घूमती रहती हैं, इसमें उच्च कोटि के वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, राजा-महाराजा और विद्वानों की आत्माएं हैं, तो सामान्य मनुष्यों, डाकुओं, चोरों और बदमाशों की आत्माएं भी घूमती रहती हैं, और ये सभी आत्माएं सैकड़ों वर्षों से वायुमण्डल में विचरण करती रहती हैं, इनका उद्देश्य या तो मुक्त वायुमंडल में विचरण होता है, क्योंकि वे पुनः गर्भ के नारकीय वातावरण में जाने को तैयार नहीं, या कुछ ऐसे गर्भ में जन्म लेने को उत्सुक होती हैं, जो उनका मनोवांछित है, उदाहरण के लिए अधिकतर आत्माएं वापस जन्म लेना ही नहीं चाहतीं, क्योंकि उन्होंने गर्भ में और गर्भ के बाहर जो कुछ भोगा है, वह ज्यादा सुखकर नहीं है, अगर वे जन्म लेना भी चाहे तो किसी ऐसे गर्भ की खोज में रहती हैं, जो उच्चवंशीय हो, सभी दृष्टियों सें सम्पन्न और सुखी हो तथा जहां उन्हें खुलकर कार्य करने का अवसर मिले, ऐसे ही गर्भ की खोज में वे आत्माएं रहती हैं, पर ऐसा गर्भ कभी-कभी संयोग से ही प्राप्त हो सकता है।

एक बात और, जिस प्रकार वर्तमान समय में

परस्पर आपा-धापी, छीना-झपटी, लूट-खसोट और मार-काट मची हुई है, उसी प्रकार आत्माओं के मध्य भी ऐसा संघर्ष चल रहा है, यहां पर कोई भी खाली जगह होती है तो दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति उस पर कब्जा कर लेता है और अपना हक जमा लेता है, भला व्यक्ति बाहर खड़ा-खड़ा ताकता ही रहता है, ठीक उसी प्रकार से उच्चवंशीय गर्भ खाली होते ही ये दुष्ट आत्माएं उस गर्भ में प्रवेश कर जाती हैं और शुद्ध एवं सात्विक आत्माएं खड़ी-खड़ी देखती ही रह जाती हैं, इसीलिए आज के युग में अच्छे और ऊंचे विचारों वाले नवजवान कम दिखाई देंगे, अधिकतर युवक ऐसे ही विचारों के होंगे जो छल, कपट, झूठ, सिगरेट, शराब आदि में रुचि रखते हों।

आत्माओं की इस भीड़-भाड़ में मनोवांछित आत्मा को ढूंढ निकालना वैसा ही कठिन है जिस प्रकार से मीलों लम्बे भीड़-भाड़ के, मेले में से मनोवांछित व्यक्ति को ढूंढ निकालना, परंतु कुछ युक्तियां ऐसी हैं, जिनके द्वारा मनोवांछित आत्मा से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है, और उनसे वे जानकारियां प्राप्त की जा सकती हैं जो कि हमारा लक्ष्य है, यदि इन आत्माओं से संपर्क किया जाए तो आश्चर्यजनक तथ्य हाथ लगते हैं, लिंकन की आत्मा से सम्पर्क स्थापित कर उस समय की

अमरीकी पृष्ठ भूमि को ज्यादा आसानी से समझा जा सकता है, महात्मा गांधी की आत्मा से संपर्क स्थापित कर, वे जानकारियां प्राप्त की जा सकती हैं, जो कि उनके मन में थीं और जिसे वे न तो व्यक्त कर पाए और न सम्पन्न कर पाए, इसी प्रकार अपने मृत माता-पिता, भाई, मित्र या प्रेमी से सम्पर्क स्थापित कर उन रहस्यों का पता लगाया जा सकता है जो वे बता न पाते और न वे उन कागज पत्रों के बारे में बता पाते हैं जो उन्होंने कहीं और कारणवश रख दिए थे, इन सारे तथ्यों की जानकारी उनकी आत्माओं से सम्पर्क स्थापित कर, की जा सकती है।

क्या आत्माओं का आह्वान उचित है -

सही शब्दों में कहा जाए तो आत्माएं निरंतर वायुमंडल में भटकती रहती हैं और वे स्वयं अपने पुत्र, पत्नी या स्वजन से बातचीत करने के लिए उत्सुक रहती हैं, परंतु दुर्भाग्य यह है कि उनके पास कोई साधन नहीं है, जिसके द्वारा वे अपने किसी रिश्तेदार से सम्पर्क स्थापित कर सकें, यह सम्पर्क-स्थापन जीवित मनुष्यों के द्वारा ही सम्भव है। आत्माएं चाह कर भी संपर्क स्थापित नहीं कर सकतीं, ज्यादा से ज्यादा वे कभी-कभी स्वप्न में आ जाती हैं, पर समय पर भी वे कुछ कह नहीं पातीं,

इसलिए मनुष्य चाहे तो मनोवांछित आत्मा से संपर्क स्थापित कर सकता है।

यह भी सही है कि ये आत्माएं अपने किसी स्वजन से बातें करने के लिए उत्सुक रहती हैं, वे इन प्रयत्नों में होती हैं कि कोई व्यक्ति उनको बुलावे, उनसे बात करे और उनकी व्यथा सुने, इसलिए जब कोई व्यक्ति आत्माओं का आह्वान करता है तो वे प्रसन्नता के साथ उपस्थित होती हैं, और यथासंभव पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देती हैं।

कभी-कभी मनोवांछित आत्मा के स्थान पर कोई गलत आत्मा भी आकर जवाब देने लग जाती है, पर यह भेद जल्दी ही खुल जाता है क्योंकि हम जिस आत्मा को बुलाते हैं उसके बारे में थोड़ी बहुत जानकारी तो रखते ही हैं, यदि उस जानकारी में एक आधा प्रश्न करें तो उसके उत्तर से यह ज्ञात हो सकता है कि वह आत्मा वही है या नहीं, जिसे हमने बुलाया है उदाहरण के लिए यदि हम अपने मृत पिता की आत्मा का आह्वान करें और जब वह उपस्थित हो तो एक-दो प्रश्न ऐसे कर लेने चाहिए जो घर की गोपनीयता से संबंधित हो, उदाहरण के लिए उसकी पत्नी का क्या नाम है अमुक कार्य किस वर्ष हुआ था आदि, इससे उस आत्मा की

प्रामाणिकता के बारे में पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त हो सकती है।

एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक आत्मा आदर और सम्मान चाहती है, आप जब भी उनको बुलाएं तो उन्हें पूरा सम्मान दें, शिष्टभाषा का प्रयोग करें, और नम्रता पूर्वक उनसे प्रश्न पूछें, इससे वे आत्माएं प्रसन्न होती हैं और आप द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर प्रसन्नता के साथ देती हैं।

आत्माओं से संपर्क-स्थापन

इन मृत आत्माओं से संपर्क स्थापन की कुछ महत्वपूर्ण विधियां हैं, जो पूरे विश्व में प्रचलित हैं, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है

सरल अबोध बालक के द्वारा

इसमें माध्यम की जरूरत होती है, यह माध्यम लगभग आठ से दस वर्ष का बालक या बालिका हो सकती है, जो सरल चित्त हो तथा छल प्रपंच से दूर हो, ऐसा हृदय सरल हृदय कहा जाता है, ऐसे बालक के शरीर में आत्मा प्रवेश कर मनोवांछित उत्तर देने के लिए तैयार हो जाती है।

इसके लिए शाम का समय ज्यादा उपयुक्त होता

है, जब धुन्धलका हो, न तो तेज रोशनी हो, न घुप्प अंधेरा ऐसे बालक को किसी खाली कमरे में चटाई बिछा कर बिठा दें, कमरे में किसी प्रकार का सामान न हो और कोने में एक अगरबत्ती लगा लें फिर उस बालक के सामने पांच-सात व्यक्ति बैठ जाएं और उस आत्मा को बुलाएं जिसे आप बुलाना चाहते हैं तथा बात करना चाहते हैं।

उदाहरण के लिए यदि आप महात्मा गांधी की आत्मा को बुलाना चाहते हैं, तो हाथ जोड़कर सरल चित्त से प्रार्थना करें कि हे मोहनदास कर्मचंद गांधी, महात्मा गांधी, आप आकर इस बालक में प्रवेश करें और हमारे प्रश्नों का जबाव दें, ऐसा आप पांच-सात या आठ-दस बार उच्चारण करें तो आप देखेंगे कि बालक के चेहरे की बनावट में अंतर आ गया है और उसके होंठ जवाब देने के लिए फड़फड़ा रहे हैं, कभी-कभी कमरे में तेज हवा का झोंका भी अनुभव होता है, जिससे पता चल जाता है, कि कोई आत्मा आई है, फिर आप उससे प्रश्न कर सकते हैं।

कांसे की कटोरी

किसी चिकने लकड़ी के पट्टे पर सफेद सनमाईका लगा हो, उस पर एक गोल घेरा खींच लें और उस घेरे के बाहर चारों ओर अंग्रेजी के **'ए से जैड'** तक

के अक्षर लिख लें, फिर मध्य में कांसे की कटोरी उल्टी रख दें, इसके बाद आप उस आत्मा का आह्वान करें जिसे आप बुलाना चाहते हैं और चार-पांच व्यक्ति मिलकर उस कांसे की कटोरी पर अपनी एक-एक उंगली हल्के दबाव से रखें, फिर आत्मा का आह्वान करें तो आप अनुभव करेंगे कि वह कटोरी हिलने लगी है फिर आप उससे प्रश्न करें और प्रश्न करने पर कटोरी एक अक्षर से दूसरे तक फिसलती रहेगी और इन अक्षरों से जो शब्द बनेंगे वह आपका उत्तर होगा, उदाहरण के लिए यदि आपने प्रश्न किया कि आपका नाम क्या है, तो वह कटोरी पहले एम पर जाएगी, इसी प्रकार बाद में ए पर, एन पर, जी पर, आई पर जाकर मांगीलाल शब्द बनाएगी, इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाएगा कि वह कौन आत्मा है।

बाद में आप जो भी प्रश्न करेंगे उसका समुचित उत्तर भी वह कटोरी फिसलती हुई जवाब देगी।

यह प्रयोग लगभग छः या सात बजे शाम को करना चाहिए जब थोड़ा-थोड़ा अंधेरा घिरने लग जाए, तेज रोशनी में आत्मा नहीं आती, यदि कमरे में अंधेरा हो तो हल्की सी मोमबत्ती लगा सकते हैं, कमरे में पांच-सात व्यक्तियों से ज्यादा लोग न हों और फिर ऊपर बताए हुए तरीके से यदि आप आत्मा

को बुलाकर प्रश्न करें तो उसकी तरफ से बराबर जवाब प्राप्त होता रहता है।जब आपके सारे प्रश्न समाप्त हो जाएं तब आप हाथ जोड़कर निवेदन करें कि अब आप जा सकते हैं, आपने जो कष्ट किया उसके लिए हम आपके आभारी हैं, ऐसा करने पर उस कटोरी की थिरकन स्वतः बंद हो जाएगी तब आप अनुमान लगा लें कि वह आत्मा चली गई।

इसके अलावा विदेशों में आरमेचर पद्धति, क्रसिंग पद्धति आदि भी प्रचलित है, जिसके माध्यम से आत्माओं से संपर्क स्थापित किया जाता है और उनसे मनोवांछित उत्तर प्राप्त किया जाता है।

भारतवर्ष में ऐसे सैकड़ों जानकार हैं, जो आत्मा को बुलाते हैं और उनसे बात कर आपके प्रश्न का उत्तर दे देते हैं, **इसके अतिरिक्त विशिष्ट साधनाओं के द्वारा भी आत्माओं से संपर्क स्थापित किया जा सकता है और उनसे उसी प्रकार बातचीत की जा सकती है, जिस प्रकार एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से बातचीत करता है,** यद्यपि इसमें सामने वाली आत्मा दिखाई नहीं देती पर उसका आभास बराबर होता है और वह आत्मा शून्य में उपस्थित होकर उन सारे प्रश्नों के जवाब देती है, जो कि इसमें चाहते हैं, इसमें **'आत्म-सिद्ध'** प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण और प्रचलित है, पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में लगभग दस-बारह शिष्य इस साधना में सिद्ध हुए हैं और उन्होंने

सफलताएं पाई हैं, इसमें हैदराबाद के चार मीनार के पास रहने वाले ज्ञानेन्द्र सूर्यवंशी, गुजरात के मेरूभाई, पटना के आलोक शर्मा, जयपुर के रामकिशन और दिल्ली के अरुण जी आदि विख्यात हैं, जिन्होंने कई बार वांछित आत्माओं से संपर्क स्थापित किया है और लोगों की समस्याओं को सुलझाया है।

लाभ ही लाभ

यह विद्या अपने-आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके द्वारा परिवार के सदस्यों को और छानबीन कर रहे व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकते हैं, यदि कोई व्यक्ति अचानक मर जाता है या उसका मर्डर हो जाता है, तो ऐसी आत्मा से संपर्क स्थापित करने पर यह भली-भांति पता चल जाता है, कि उसकी हत्या किसने और कहां पर की? यह हत्या किन परिस्थितियों में हुई तथा उसकी लाश किस जगह पड़ी हुई है? यह जानकारी हत्या की गुत्थी को सुझलाने में विशेष रूप से सहायक हो सकती है या अपने किसी स्वजन की अचानक मृत्यु हो जाने पर उससे संपर्क स्थापित कर यह पता लगाया जा सकता है, कि घर की चाबियां कहां पर रखी हैं? किन-किन को धनराशि उधार दी हुई है या गोपनीय धन कहां पर गाड़ा हुआ है? अथवा उनकी कोई बची हुई इच्छा है, जिसे पूरी की जा सके? आदि ऐसी सैकड़ों बाते हैं, जिसके द्वारा इन रहस्यों का पता लगाया जा सकता है।

आत्मा-साधना सिद्धि

यह साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण है और कोई भी स्त्री या पुरुष इस साधना को सिद्ध कर सकता है, इसमें किसी प्रकार के लम्बे-चौड़े उपकरणों की जरूरत नहीं होती। मात्र ५ दिनों अथवा २१ दिनों में मंत्र जप कर इस साधना को करने पर स्वयं का किसी भी प्रकार का कोई अहित नहीं होता, और यह सिद्धि जीवन भर उसके पास बनी रहती है।

सौभाग्यशाली व्यक्ति ही इस साधना को सिद्ध करने की ओर अग्रसर होते हैं। जोधपुर आकर पूज्य गुरुदेव से अनुमति लेकर उनके निर्देशन में यह साधना सिद्ध की जा सकती है, ऐसी साधना सिद्ध होने पर वह हजारों-हजारों लोगों का कल्याण कर सकता है और इसके द्वारा खोए हुए बालक का पता लगाना, हत्या के कारणों की जानकारी प्राप्त कर लेना, गड़े हुए धन के बारे में मालूम कर लेना, मरते समय उस मनुष्य की क्या इच्छा थी और अब उसकी क्या इच्छा है? जिसे पूरा करने पर उसे सुख और संतोष मिले, इसके बारे में इस विधि के द्वारा राहत दिलाई जा सकती है तथा उनकी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। यह साधना दो प्रकार की एक साधना तो मात्र पांच दिनों में सिद्ध हो जाती है और दूसरी लगभग २१ दिनों में, इन दोनों ही प्रकार की साधनाओं को व्यक्ति जानकर पूरे भारतवर्ष में सम्मान प्राप्त कर सकता है।



मैंने विश्वामित्र की आत्मा से सम्पर्क स्थापित किया

यह मेरा सौभाग्य है कि मैं पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी का शिष्य हूं और उनसे मैंने तंत्र की कुछ विशिष्ट क्रियाएं सीखी हैं, मेरी इच्छा आत्म साधना को सीखने की थी, और इसे मैंने मात्र पांच दिनों में ही सिद्ध कर लिया, जब मैंने मनोवांछित आत्माओं को बुलाने और उनसे बात करने की कला सीख ली तो मुझे पल-पल रोमांच हो जाता, कभी मैं डाकू मानसिंह की आत्मा से बात करता था, और डाकू जीवन की उन घटनाओं को सुनता था जो उनके जीवन की गोपनीय घटनाएं थीं, एक-एक घटना आश्चर्यजनक, रहस्यमय और रोमांचकारी थी, कभी मैं हॉलीवुड की श्रेष्ठतम हीरोइन मार्लिन से बात करता था, जिसने मात्र २२ वर्ष की उम्र में ही नींद की गोलियां खा कर आत्महत्या कर

ली थी, मैं उसके द्वारा आत्मघात की कहानी सुनकर रोमांचित हो उठा। मैंने अपने पिताजी की आत्मा से भी संपर्क स्थापित किया और जब मैंने उनकी व्यथा और इच्छा सुनी तो रोमांचित हो उठा, इसके बाद मैंने उनकी इच्छा को पूरा किया व जिस प्रकार से उन्होंने हरिद्वार में जाकर धार्मिक क्रिया सम्पन्न करने की आज्ञा दी, उसी प्रकार से वह कार्य सम्पन्न किया, जिससे कि उनकी मृत आत्मा को शांति मिल सकी और वह आत्मा मुक्ति पा सकी, एक पुत्र के नाते यह मेरा महत्वपूर्ण कार्य था।

मेरी रुचि तंत्र में रही है, व **तंत्र के द्वारा ही मैं उस स्थिति को प्राप्त करना चाहता था जो कि जीवन का लक्ष्य है, तंत्र के क्षेत्र में विश्वामित्र से ऊंचा अन्य कोई व्यक्तित्व नहीं हुआ**, गोरखनाथ, स्वामी शंकराचार्य और त्रिजटा अघोरी आदि उनके सामने बौने से लगते हैं।

मेरी इच्छा ऐसे ही महान व्यक्तित्व विश्वामित्र से संपर्क स्थापित कर उनसे तंत्र की उन क्रियाओं को सीखने की इच्छा थी, जो अपने आप में अद्वितीय और गोपनीय है।

इस संबंध में मैंने पूज्य गुरुदेव से निवेदन किया तो उन्होंने विश्वामित्र की आत्मा से संपर्क स्थापित कर तंत्र की कठिन और गूढ़ क्रियाएं सीखने की

अनुमति दे दी, और एक दिन महत्वपूर्ण अवसर पर मैंने इसी साधना के द्वारा उनसे सम्पर्क स्थापित कर लिया।

मैं सांझ के धुन्धलके में अपने कमरे में बैठा था, और पूर्ण पवित्रता के साथ उस मंत्र का जप कर रहा था जिसके द्वारा उच्चकोटि की आत्मा का आह्वान होता है, मैंने अचानक अपने सामने अद्वितीय व्यक्तित्व सम्पन्न योगीराज को देखा, लम्बी सफेद दाढ़ी आजानुपर्यन्त लम्बी जटाएं, चौड़ा और समुद्रवत विशाल वक्षस्थल बड़ी-बड़ी तेजस्वी आंखें और साधना से सिद्ध तपोमय गौरवर्ण शरीर . . . ऐसा लगा कि जैसे साक्षात् सिद्ध पुरुष मेरे सामने उपस्थित हुआ हो, मैंने सामने व्याघ्रचर्म बिछा दिया था, और उस पर आकर वह सिद्ध आत्मा बैठ गई, पुराणों में मैंने विश्वामित्र के शरीर की जिस प्रकार से बनावट पढ़ी थी ठीक वैसा ही शरीर मेरे सामने विद्यमान था, मैंने भक्ति-भाव से उन्हें विनम्रता पूर्वक प्रणाम किया।

मैंने निवेदन किया कि मैं आपको कष्ट नहीं देता, परंतु तंत्र के क्षेत्र में आप अद्वितीय हैं, और आपसे मैं कोई ऐसा तंत्र सीखना चाहता हूं जो अपने-आप में अद्वितीय हो।

महा ऋषि विश्वामित्र दो क्षण मुझे ताकते रहे

फिर बोले-यद्यपि यह तुम्हारी अनाधिकार चेष्टा है, परंतु मैं तुम्हें वह तंत्र सिखा देता हूं जो कि अब तक सर्वथा गोपनीय रहा है क्योंकि तुम्हें वंदनीय निखिलेश्वरानंद जी ने साधना विधि समझाई।

इसे **''उर्वशी रति क्रिया साधना सिद्धि''** कहते हैं, यह अब तक गोपनीय विषय रहा है, इसे सिद्ध करने पर उर्वशी जीवन भर प्रेमिका के रूप में साधक के साथ रहती है, और मर्यादा के अनुसार उसका किसी प्रकार से भोग करना अनुचित नहीं है, सिद्ध होने पर वह नित्य विविधि द्रव्य प्रदान करती है, और एक विशेष बात यह है कि इसे सिद्ध करने पर अन्य आठों अप्सराएं स्वतः सिद्ध हो जाती हैं जिनके नाम हैं -

१. त्रिपुर सुंदरी अप्सरा २. धनदा रति प्रिया ३. तिलोत्तमा ४. कांचन माला ५. मेनका ६. रम्भा ७. विशाल नेत्रा और ८. मंजू घोषा

ये आठों अप्सराएं भी साधक के चारों ओर पूर्ण यौवन के साथ चौबीसों घण्टे उपस्थित रहती हैं, और साधक उनके बीच इंद्र की तरह पूर्ण भोग एवं भौतिक सुख प्राप्त करता है।

फिर थोड़ा रुक कर विश्वामित्र बोले--इस साधना की एक और विशेषता है कि इससे वह व्यक्ति भी पूर्ण

यौवनमय, सुंदर एवं आकर्षक बन जाता है, एक प्रकार से देखा जाए तो उसका पूरी तरह से कायाकल्प हो जाता है, और सारा शरीर आकर्षक यौवन वेग से उत्तप्त हो जाता है, इसके साथ ही साथ वे आठों अप्सराएं उसे प्रेमी रूप में स्वीकार करती हैं फलस्वरूप वह बेतहाशा धन, द्रव्य एवं सुखोपभोग की सामग्री प्रदान करती रहती हैं।

इस साधना को मैंने अत्यधिक परिश्रम से निर्माण किया है, और मैं अपने कुछ शिष्यों के अलावा आज पहली बार तुम्हारे सामने स्पष्ट कर रहा हूं --

फिर **विश्वामित्र ने साधना रहस्य को समझाते हुए कहा कि** कुछ वनस्पतियां भी तंत्र मय होती हैं, अतः इस साधना में **''श्रृंगाटिका''** वनस्पति को भर कर एक आसन बना लेना चाहिए, जिस पर साधक को पूर्णमासी की रात्रि में एकान्त कक्ष में बैठना चाहिए, इसके बाद **''यौवनभृंगा''** वनस्पति के रस से धुली हुई धोती पहिनें और सामने **'अष्ट किन्नरी यंत्र'** रख दें **'उर्वशी-माला'** से मंत्र जप करें। उर्वशी माला में विशेष मनके होते हैं जो स्फटिक के समतुल्य होते हैं। इस माला से नित्य २१ माला मंत्र जप होना आवश्यक है। यह २१ दिन की साधना है, और इस प्रकार नित्य करने पर २१ वें दिन निश्चय ही १८ वर्ष की पूर्ण यौवन मय सुंदर श्रृंगार किए उर्वशी

साधक के सामने उपस्थित होती है, उस समय पहले से ही दो गुलाब मालाएं साधक को २१ वें दिन अपने पूजा स्थान में रख देनी चाहिए, उर्वशी उसमें से एक माला उठाकर साधक के गले में पहिना कर उसे प्रिय रूप में स्वीकार कर लेती है, **तब साधक को भी दूसरी माला उसके गले में पहना देनी चाहिए, ऐसा करने पर उर्वशी और उसकी सहायिकाएं अष्ट अन्य अप्सराएं उसके वश में हो जाती हैं, और जीवन भर उसे अतुल्य धन, द्रव्य एवं सुखोपभोग की सामग्री प्रदान करती रहती हैं।**

मैंने दूसरे दिन पूर्णमासी से यह साधना प्रारम्भ की और पहली बार में ही मुझे निश्चित सफलता प्राप्त हो गई। आज जो मैं पूर्ण यौवनमय एवं अतुलनीय सम्पत्ति का स्वामी हूं उसका कारण यह साधना ही है, पूज्य गुरुदेव से मैंने इसमें अत्यधिक आवश्यक श्रृंगाटिका वनस्पति से युक्त आसन प्राप्त कर लिया था, और उसी प्रकार से धोती भी तैयार कर पहिन ली थी।

इस साधना में पूज्य विश्वामित्र ने जो मंत्र बताया था, वह इस प्रकार है -

मंत्र

''ॐ अनंग मन्मथायै ऐं क्लीं नित्य क्लिन्ने मद्रवे स्वाहा''

वास्तव में ही कभी-कभी कोई साधना या मंत्र

अचानक प्राप्त हो जाता है, और वह अपने-आप में अद्भुत और आश्चर्यजनक होता है कि सहसा विश्वास नहीं होता, परंतु मैंने ही नहीं अपितु कुछ और साधकों ने भी इस प्रयोग को किया है और प्रत्येक साधक को इसमें सफलता मिली है। इससे जीवन में बेतहाशा धन प्राप्त होता रहता है, और पूर्ण शरीर यौवन रस से आप्लावित होकर यौवन मद से सिक्त रहता है। एक अजीब सी खुमारी और आनंद जीवन में बना रहता है।

वास्तव में ही यह महत्वपूर्ण एवं गोपनीय प्रयोग है, साधक इसका लाभ उठा कर मेरे इस कथन की पुष्टि कर सकते हैं कि यह तंत्र अचूक एवं प्रामाणिक है।



Scanned with CamScanner